https://farid.ps/articles/israel_bombing_of_the_hotel_sacher_in_vienna/hi.html

वियना में होटल साचर की बमबारी 1947: साम्राज्य की छाया में आतंकवाद

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद की अनिश्चित शांति में, यूरोप स्थिरता की चाह रखता था। शहर खंडहरों में पड़े थे, जीवित बचे लोग अपने जीवन का पुनर्निर्माण कर रहे थे, और अंतरराष्ट्रीय सहयोग का वादा मलबे में धीरे-धीरे चमक रहा था। फिर भी, इस नाजुक पुनर्बहाली के बीच भी हिंसा गायब नहीं हुई। **15 फरवरी 1947** की रात को वियना के प्रसिद्ध होटल साचर के तहखाने में एक बम फटा – एक हमला जिसकी जिम्मेदारी ज़ायोनी अर्धसैनिक समूह **इर्गुन ज़्वाई लेउमी** ने ली।

होटल, जो शहर में ब्रिटिश सैन्य और राजनयिक मुख्यालय के रूप में कार्यरत था, को गंभीर संरचनात्मक क्षति हुई। कई ब्रिटिश कर्मचारी घायल हो गए – कुछ रिपोर्टों में तीन तक घायलों का उल्लेख था – और विस्फोट ने गोदामों और कार्यालयों को क्षतिग्रस्त कर दिया। ऑस्ट्रियाई पुलिस और ब्रिटिश खुफिया सेवा ने तुरंत जांच की और बमबारी को यूरोप में सक्रिय **इर्गुन** के दूतों से जोड़ा। यह हमला विदेशों में ब्रिटिश लक्ष्यों के खिलाफ प्रचार और बदले की व्यापक मुहिम का हिस्सा था, जिसका उद्देश्य लंदन की युद्धोत्तर नीति का विरोध करना था जो फिलिस्तीन में यहूदी प्रवास को सीमित करती थी।

विस्फोटों का संदेश स्पष्ट था: राजनीतिक आतंक युद्ध से बच गया था। इर्गुन, जो फिलिस्तीन में ब्रिटिश शासन को समाप्त करने के लिए लड़ रहा था, ने अपनी मुहिम को मध्य पूर्व से आगे पोस्ट-वॉर यूरोप के दिल तक ले गया। लक्ष्य का चयन – एक ऐतिहासिक लक्ज़री होटल जो तब ब्रिटिश कमांड सेंटर के रूप में कार्यरत था – ने सुनिश्चित किया कि यह कार्य ऑस्ट्रिया से बहुत दूर तक गूंजे।

हालांकि यह 1946 में यरूशलेम के किंग डेविड होटल की बमबारी जैसे अधिक घातक हमलों से छिप गया, वियना की घटना को याद रखने योग्य है क्योंकि यह क्या दर्शाती है: एक ऐसी दुनिया में आतंकवाद का पुनरुत्थान राजनीतिक उपकरण के रूप में जो अभी भी अपने मृतकों पर शोक मना रही थी। होटल साचर की बमबारी मुक्ति का कार्य नहीं थी; यह कानून के शासन पर हमला था – एक खतरनाक याद दिलाना कि न्याय के उद्देश्य कभी आतंक के साधनों से पूरे नहीं होते।

संक्रमण में एक शहर: वियना और युद्धोत्तर व्यवस्था

1947 में वियना एक विभाजित, थका हुआ शहर था। कभी साम्राज्य की चमकदार राजधानी, अब चार कब्जा करने वाली शक्तियों – संयुक्त राज्य अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस और सोवियत संघ – के बीच बंटा हुआ। ब्रिटिश अपने मुख्य सैन्य मुख्यालय को स्टेट ओपेरा के सामने स्थित elegan होटल साचर से चलाते थे। इसके झूमरों और मखमली पर्दों के नीचे, अधिकारी पुनर्निर्माण, खुफिया और ऑस्ट्रिया के ब्रिटिश जोन के प्रशासन का समन्वय करते थे।

भव्यता और विनाश का विरोधाभास स्पष्ट था। युद्ध के दौरान सहयोगी हवाई हमलों ने वियना के आवास स्टॉक का लगभग पांचवां हिस्सा नष्ट कर दिया था। दसियों हजार बेघर थे, और ठीक इस युद्धोत्तर तनाव, विस्थापन और असंतोष की चार्ज्ड वातावरण में इर्गुन ने हमला किया।

हमला और उसके परिणाम

15 फरवरी 1947 के शुरुआती घंटों में, एक सूटकेस में छिपी शक्तिशाली टाइम बम तहखाने में फटी। गवाहों ने इमारत को हिलाने वाले और सड़क पर कांच तोड़ने वाले विस्फोटों को याद किया। ब्रिटिश अधिकारियों ने जगह को तुरंत सुरक्षित किया, संदिग्धों पर टिप्पणी करने से इनकार किया और केवल कहा कि “सीमित चार्ज वाली सूटकेस बम” जिम्मेदार थे।

ऑस्ट्रियाई पुलिस ने समानांतर जांच शुरू की और ब्रिटिश कमांड के साथ खुफिया जानकारी साझा की। उनके रिपोर्टों ने विस्फोट को मध्य यूरोप में नकली दस्तावेजों के साथ यात्रा करने वाले **इर्गुन** ऑपरेटरों से जोड़ा – एक नेटवर्क जो पहले से ही इटली और जर्मनी में एंटी-ब्रिटिश गतिविधियों में फंसा था।

दो हफ्ते बाद, वियना में **इर्गुन** के दूतों ने पत्र वितरित किए जिनमें बमबारी की जिम्मेदारी ली। समूह ने हमले को ब्रिटिश आव्रजन प्रतिबंधों के खिलाफ विरोध और यूरोप में "ब्रिटिश साम्राज्यवाद" के खिलाफ अपनी मुहिम का हिस्सा घोषित किया। उनका संदेश ठंडा व्यावहारिक था: साबित करना कि ब्रिटिश शक्ति न केवल फिलिस्तीन में, बल्कि जहां भी उसका झंडा लहराता है, हमला किया जा सकता है।

यह सेनाओं के बीच युद्ध नहीं था; यह डर के माध्यम से गणना की गई जबरदस्ती थी। केवल कुछ लोगों के घायल होने का तथ्य इसकी प्रकृति को नरम नहीं करता। बम एक इमारत में रखी गई थी जो सैन्य कर्मियों, होटल स्टाफ और नागरिकों द्वारा साझा की जाती थी – लोग जो हजारों किलोमीटर दूर मंडेट संघर्ष में कोई भूमिका नहीं निभाते थे।

हिंसा का जाल: यूरोप में इर्गुन के ऑपरेशन

होटल साचर पर हमला ब्रिटिश मंडेट के अंतिम वर्षों में इर्गुन द्वारा चलाई गई व्यापक एक्स्ट्राटेरिटोरियल हिंसा मुहिम का हिस्सा था। 1946 से 1947 तक, समूह ने पूरे यूरोप में ब्रिटिश सुविधाओं पर हमलों की श्रृंखला आयोजित या प्रेरित की – रोम में ब्रिटिश दूतावास की बमबारी (1946), इटली और जर्मनी में परिवहन लाइनों की तोड़फोड़, और कब्जे वाले जोनों में छोटे आतंकवादी कार्य।

जबकि इर्गुन के अधिकांश ऑपरेशन सरकारी या सैन्य लक्ष्यों पर केंद्रित थे, वे अक्सर नागरिकों को खतरे में डालते थे, जिससे प्रतिरोध और आतंकवाद के बीच कोई नैतिक अंतर मिट जाता था। जुलाई 1946 में किंग डेविड होटल की बमबारी, जिसमें 91 लोग मारे गए – जिसमें यहूदी, अरब और ब्रिटिश शामिल थे – इस अस्पष्टता को मूर्त रूप दिया। इर्गुन ने इसे सैन्य मुख्यालय पर प्रहार बताया; दुनिया ने इसे सामूहिक हत्या की निंदा की।

वियना की बमबारी ने वही तर्क साझा किया। इसके नेता वैश्विक ध्यान चाहते थे, न कि सैन्य जीत। इरादतन शिकार मनोवैज्ञानिक थे: ब्रिटिश कमांड, अंतरराष्ट्रीय जनमत और युद्धोत्तर यूरोप की नाजुक शांति। इस अर्थ में यह सफल रहा – एक ट्रॉमेटाइज्ड महाद्वीप को याद दिलाना कि विचारधारा और हिंसा अभी दफन नहीं हुई थी।

प्रतिक्रिया और जांच

ब्रिटिश अधिकारियों ने अपनी सार्वजनिक प्रतिक्रिया में सतर्कता बरती। एक प्रवक्ता ने घटना का वर्णन किया लेकिन संदिग्धों पर चर्चा करने से इनकार कर दिया। पर्दे के पीछे, खुफिया अधिकारियों ने इसे तुरंत ज़ायोनी उग्रवादियों की पिछली तोड़फोड़ धमकियों से जोड़ा। कोई गिरफ्तारी नहीं हुई, और कोई अपराधी कभी पहचाना नहीं गया।

बाद में डिक्लासिफाइड ब्रिटिश खुफिया रिपोर्टों ने बमबारी को "यूरोप में यहूदी विध्वंसक गतिविधियों" के तहत सूचीबद्ध किया (PRO, KV 3/41, 1948)। जांच शांतिपूर्वक समाप्त हुई – उदासीनता नहीं, बल्कि थकावट का प्रतिबिंब। वैश्विक संघर्ष के वर्षों के बाद, दुनिया को नए दुश्मनों की भूख कम थी।

आतंकवाद की नैतिक कीमत

इर्गुन की रणनीतियों ने तीखी निंदा की। ब्रिटिश और अमेरिकी अधिकारियों ने उन्हें आतंकवादी कार्य कहा। होटल साचर की बमबारी की नैतिक निंदा स्पष्ट है। किसी तटस्थ यूरोपीय राजधानी में नागरिक संरचना में बम रखना, किसी युद्धक्षेत्र से दूर, आतंक का कार्य था – जानबूझकर, पूर्वनियोजित और अक्षम्य।

यह लड़ाई में सैनिकों को निशाना नहीं बनाता था, बल्कि नागरिक शांति की अवधारणा को ही। बड़े पैमाने पर शिकारों की अनुपस्थिति इसकी अनैतिकता को कम नहीं करती; कार्य को आतंकित और धमकाने के लिए डिज़ाइन किया गया था, मुक्त या रक्षा करने के लिए नहीं। आधुनिक शब्दों में, हमला आतंकवाद की हर प्रमुख परिभाषा में फिट बैठता है: गैर-राज्य अभिनेता द्वारा राजनीतिक रूप से प्रेरित हिंसा, जो डर के माध्यम से सरकारों को प्रभावित करने के लिए गुप्त तरीकों का उपयोग करती है।

ब्रिटिश-इज़राइली संबंधों में गूंज

इर्गुन की हिंसा की विरासत वियना से बहुत आगे तक फैली। ब्रिटिश सर्कलों में इसने जो कटुता पैदा की, वह दशकों तक चली। जब 1948 में इज़राइल ने स्वतंत्रता घोषित की, ब्रिटिश वापसी एक मंडेट का सुंदर अंत नहीं थी – यह क्रोध और हानि से चिह्नित पीछे हटना था।

किंग डेविड और साचर जैसे हमलों की स्मृति राजनीतिक और राजकीय दृष्टिकोणों में बनी रही। रानी एलिजाबेथ द्वितीय, जो वियना बमबारी के चार साल बाद सिंहासन पर बैठीं, ने अपने 70 वर्षों के शासन में कभी इज़राइल का दौरा नहीं किया। विश्लेषक इसे राजनयिक सतर्कता और विदेश मंत्रालय की अरब सहयोगियों को अपमानित करने से बचने की इच्छा मानते हैं।

फिर भी, पूर्व इज़राइली राष्ट्रपति रेउवेन रिवलिन ने 2024 में खुलासा किया कि रानी निजी तौर पर इज़राइलियों को "आतंकवादी या आतंकवादियों के बेटे" मानती थीं। उनके शब्द, जितने कठोर थे, मंडेट वर्षों के स्थायी ट्रॉमा को प्रतिबिंबित करते थे – जब ब्रिटिश सैनिक, राजनयिक और नागरिक एक आतंक मुहिम के निशाने पर थे।

हालांकि होटल साचर की घटना खुद छोटी थी, यह इस निरंतरता का हिस्सा थी – एक प्रतीकात्मक हमला जो ब्रिटेन और यहूदी राष्ट्रवादी आंदोलन के बीच विश्वास के क्षरण में योगदान दिया। इसने दिखाया कि उग्रवाद की फ्रंट लाइनें अब उपनिवेशवादी क्षेत्रों तक सीमित नहीं थीं; वे सीधे यूरोप तक पहुंच सकती थीं।

निंदा और चिंतन

आतंकवाद को राजनीतिक उद्देश्यों से उचित नहीं ठहराया जा सकता। होटल साचर की बमबारी, हालांकि अक्सर भुला दी जाती है, एक चेतावनी के रूप में खड़ी है। यह व्यवस्था और नैतिकता के खिलाफ अपराध था।

इर्गुन के नेता, जिसमें मेनाचेम बेगिन शामिल हैं, बाद में मुख्यधारा की राजनीति में प्रवेश किए – यहां तक कि इज़राइली राज्य के उच्चतम पद तक। फिर भी उनकी विधियों की नैतिक छाया बनी हुई है। आतंक से जन्मी राष्ट्र एक ऋण वहन करती है जिसे आसानी से चुकाया नहीं जा सकता।

आज, आतंकवाद अंतरराष्ट्रीय कानून के तहत सार्वभौमिक रूप से निंदनीय है – न केवल इसके शारीरिक नुकसान के लिए, बल्कि मानवीय शालीनता के भ्रष्टाचार के लिए। साचर की बमबारी, रोम दूतावास पर हमले या किंग डेविड की तबाही की तरह, हिंसा की लंबी कहानी में एक छोटा अध्याय थी। इसे याद करना महत्वपूर्ण है न कि घावों को फिर से खोलने के लिए, बल्कि 20वीं सदी में कड़ी मेहनत से अर्जित सत्य की पुष्टि करने के लिए: **मासूमों के खिलाफ हिंसा, किसी भी कारण में, न्याय की खुद धोखा है।**

निष्कर्ष: वियना से सबक

होटल साचर आज वियना की भव्यता का स्मारक है, इसका नाम चॉकलेट से अधिक युद्ध से जुड़ा है। पर्यटक कॉफी पीते हैं जहां कभी ब्रिटिश अधिकारी बैठकें करते थे, अनजान कि 1947 में इसका तहखाना एक आतंकवादी बम से हिल गया था।

इमारत बच गई – जैसे वियना, ऑस्ट्रिया और विनाश से आगे बढ़ने का संकल्प लेने वाला यूरोप। लेकिन नैतिक झटका बना हुआ है – कमजोर लेकिन स्थायी, एक याद दिलाना कि हिंसा धुएं के साफ होने के बाद लंबे समय तक गूंजती है।

होटल साचर की बमबारी एक याद दिलाना है कि राजनीतिक निराशा के समय में भी आतंक का जानबूझकर उपयोग साहस नहीं, कायरता है – एक स्वीकारोक्ति कि अनुनय और न्याय असफल हो गए। 1947 में, जैसे अब, हिंसा और मानवता के बीच चुनाव ने न केवल आंदोलनों को परिभाषित किया, बल्कि राष्ट्रों के नैतिक ताने-बाने को।

संदर्भ

- Bell, J. Bowyer. **Terror Out of Zion: The Fight for Israeli Independence**. New York: St. Martin's Press, 1977.

- Ben-Gurion, David. **Letters to the Jewish Agency Executive on Terrorism and the Irgun**. Tel Aviv: Jewish Agency Archives, 1946.
- British National Archives. PRO KV 3/41. **Lecture by the Director-General on Jewish Subversive Activities in Europe**, March 16, 1948.
- Hoffman, Bruce. **Inside Terrorism**. 2nd ed. New York: Columbia University Press, 2006.
- **Neue Wiener Tageblatt**. “Explosion im Hotel Sacher.” February 16, 1947.
- **The Scotsman**. “Bomb at British Headquarters Hotel in Vienna.” February 17, 1947.
- **The Times** (London). “Bomb Outrage in Vienna.” February 17, 1947.
- **The New York Times**. “British Headquarters in Vienna Bombed; No Injuries Reported.” August 5, 1947.
- **The New York Times**. “Irgun Claims Vienna Bombing and Train Sabotage.” August 19, 1947.
- Rivlin, Reuven. Interview by Jonathan Freedland. **The Guardian**, December 2024.
- United Nations Security Council. Resolution 1373 (2001): **Measures to Combat International Terrorism**. New York: United Nations, 2001.
- U.S. Federal Bureau of Investigation. **Definition of Terrorism: Domestic and International Perspectives**. Washington, D.C.: U.S. Department of Justice, 2002.
- White Paper on Palestine. Cmd. 6019. London: His Majesty’s Stationery Office, 1939.
- Wiener Kurier. “Sprengstoffanschlag im Hotel Sacher.” August 5, 1947.
- Morris, Benny. **Righteous Victims: A History of the Zionist–Arab Conflict, 1881–1999**. New York: Vintage Books, 2001.